जिज्ञासा

इसलिए कहते हैं 'काइट'

बच्चों को पतंगों से हमेशा ही लगाव रहा है। कहते हैं, पक्षी को देखकर बनी पतंग और पतंग को उड़ता देखकर वैज्ञानिकों ने की हवाई जहाज बनाने की कल्पना। मौका चाहे 15 अगस्त का हो या मकर संक्रांति का पतंग उड़ाने में बच्चों का जोश देखते ही बनता है। इन दिनों रंगबिरंगी पतंगों से आकाश भी रंगीन दिखने लगता है।

आज से करीब दो हज़ार साल पहले यानी ईसा पूर्व चीन में पतंग उड़ाने की शुरुआत हुई थी। चीन के समाज में पतंगों को भी शकुन- अपशकुन से जोड़कर देखा जाता था। यहां किन राजवंश के दौरान पतंग को उड़ाकर छोड देने को अपशकुन माना जाता था। साथ ही किसी कटी हुई पतंग को उठाना भी बुरा शकुन माना जाता था।

समय के साथ-साथ पतंगें बर्मा, कोरिया, थाईलैंड, जापान, अरब, उत्तरी अफ्रीका और भारत में भी काफी लोकप्रिय हो गईं। पहले मैसेज भेजने के लिए पतंगों का इस्तेमाल किया जाता था। कुछ लोगों का यह भी मानना है कि लगभग उसी काल में एक यूनानी आरकाइट्स ने दुनिया की सबसे पहली पतंग का निर्माण किया था और इसी कारण पतंग को अंग्रेजी में काइट कहते हैं। पतंग सिर्फ मनपरचावे की ही चीज नहीं है, इसका संबंध कई आविष्कारों से भी है। आपको यह जानकर हैरानी होगी कि एरोप्लेन के आविष्कारक राइट ब्रदर्स ने पतंगों से काफी कुछ सीखा था। बेंजामिन फ्रैंकलिन और मारकोनी ने भी पतंगों की मदद से कई आविष्कार किए। सन् 1883 में इंग्लैंड के डगलस आकिवेल्ड ने पतंगों के जरिए 1200 फीट की ऊंचाई पर बहती हवा की गति भी मालूम की थी।



पौधे...जो खाते हैं मांस

हमें भोजन देने वाले पेड़-पौधे खुद को जिंदा रखने के लिए कीट-पतंगे भी खाते हैं, यह सुनने में अजीब लगता है, पर सच है। कीट-पतंगे खाने वाले करीब 600 विभिन्न तरह के प्लांट्स दुनियाभर में पाए जाते हैं...







प्लांट्स अपना भोजन खुद तैयार कर सकते हैं। भोजन के लिए जरूरी सारी चीजें उन्हें सूर्य की रोशनी, हवा, पानी और मिट्टी से मिल जाती हैं। यहां तक कि मांसाहारी पौधे भी दूसरे प्लांट्स की तरह खुद भोजन तैयार करते हैं। दरअसल, दलदली जमीन या पानी के नजदीक उगने वाले कुछ पौधों को जरूरी मात्रा में नाइट्रोजन नहीं मिल पाता है जिस कारण ये कीट-पतंगे खाकर इस कमी को पूरा करते हैं।

इस तरह करते हैं शिकार

ये प्लांट्स कीट-पतंगों को पकड़ने के लिए जानवरों की तरह दौड़ तो नहीं सकते और न ही इनके हाथ या दांत होते हैं। ये कीट-पतंगों को पकड़ने के लिए कई तरह के रूप धरते हैं। ये प्लांट्स देखने में बेहद सुंदर होते हैं। इनकी खूबसूरती से आकर्षित होकर कीट इनके पास आते हैं और इनका शिकार बन जाते हैं।

इन प्लांट्स की पत्तियां भी बड़ी अजीब-सी होती हैं। ये वास्तव में इन प्लांट्स के छोटे पेट की तरह होती हैं। जब ये पत्तियां कीट-पतंगों को फंसाती हैं, तो ये पाचक रस छोड़ती हैं। यह रस पहले कीटों का दम घोटता है और फिर धीरे-धीरे उनका शरीर डिजॉल्व करता है। कीट के शरीर में से प्लांट नाइट्रोजन, नमक और दूसरे मिनरल्स अब्जॉर्ब कर लेता है, जो इसके विकास के लिए जरूरी होते हैं।

नेपिन्थिस

यह प्लांट भारत में असम की खासी और गारो पहाड़ियों पर पाया जाता है। इसकी पत्तियों के सिरे सुराही जैसे आकार के होते हैं। ये पत्ते कीटों के लिए फंदे का काम करते हैं और उन्हें फंसा लेते हैं। यह अद्‌भुत सुराही डेढ़ से आठ इंच तक लंबी होती है। देखने में बहुत सुंदर लगने वाली इस सुराही के किनारों पर सब ओर शहद की थैलियां एक कतार में होती हैं। कीट-पतंगे सुराही के रंग से आकर्षित होकर शहद के लालच में अपनी जान गंवा बैठते हैं। सुराही की दीवार चिकनी होने के कारण ये रेंगकर बाहर भी निकल नहीं पाते। इसके तल में रस रहता है जो इन्हें जल्दी ही पचा जाता है और पचे हुए भाग को इसकी दीवारें सोख लेती हैं।

सेरोसेनिया

इस प्लांट में तुरही की शक्ल की थैलीनुमा पत्तियां जमीन पर एक झुंड में सजी रहती हैं। आकर्षक रंग की ये पत्तियां अपने मुंह पर कुछ ग्रंथियां लिए रहती हैं, जिनमें शहद होता है। कीट-पतंगे इसके रंग और शहद से आकर्षित होकर थैली के भीतर चले जाते हैं और फिर तुरही के मुंह के भीतर लगे कांटों के कारण बाहर नहीं निकल पाते।

ड्रोसैरा

यह एक बहुत सुंदर कीट-भक्षी पौधा है, जो शिमला, मसूरी और नैनीताल जैसे ठंडे इलाकों में उगता है। इसकी गोलाकार पत्तियों के किनारे लाल रंग के तीखे बाल होते हैं, जिनसे एक चिपचिपा रस निकलता रहता है। ड्रोसैरा प्लांट से निकला यह रस धूप की रोशनी में ओस की तरह चमकता है। नन्हे कीट-पतंगों को यही रस चिपका लेता है और फिर घुंडियां मुड़कर चारों ओर से उसे घेर लेती हैं।

कोबरा प्लांट्स

इसे कैलिफोर्निया पिचर प्लांट के नाम से भी जाना जाता है। यह आमतौर पर कैलिफोर्निया के कुछ हिस्सों में पाया जाता है। कोबरा प्लांट अन्य मांसाहारी पौधों से थोड़ा भिन्न है। इसमें पाचक ग्रंथियां नहीं होतीं, बल्कि एक छोटा-सा छेद होता है, जहां से बिना पचा भोजन बाहर निकल जाता है।

सैनड्यूस

सैनड्यूस आमतौर पर दलदली जमीन में उगता है और खूबसूरत रंगों के कारण देखने में इंद्रधनुषी पौधे जैसा लगता है। इसके पत्तों के सिरों पर चिपचिपा और मीठा लिक्विड होता है, जो कीट-पतंगों को आकर्षित करता है। प्लांट अपने टैंटेकल्स में कीटों को जकड़ लेते हैं और 15 मिनट के भीतर ही उसे मार डालते हैं।

डायोनिया

डायोनिया में कीट-पतंगों को पकड़ने वाला फंदा जमीन पर सजी पत्तियां होती हैं। इसका शिकार करने का तरीका भी ड्रोसैरा की तरह ही होता है। यह प्लांट अमेरिका के कई हिस्सों में पाया जाता है। इसे अपना शिकार पचाने में करीब एक हफ्ता लग जाता है।

दिमाग की बत्ती

खून का रंग लाल होता है, क्यों?

हीमोग्लोबिन के कारण खून का रंग लाल होता है। रेड ब्लड सेल्स में हीमोग्लोबिन होता है, आयरन इसका मुख्य घटक है। आयरन ब्लड में ऑक्सीजन होल्ड करने में मदद करता है और जब आयरन और ऑक्सीजन मिक्स हो जाते हैं, तो हिमोग्लोबिन का रंग लाल हो जाता है।

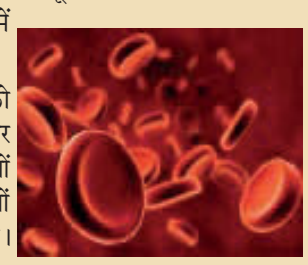
- हमारे शरीर में करीब 5 से 6 लीटर ब्लड होता है, जो एक मिनट में तीन बार पूरे शरीर में सर्कुलेट होता है। यानी एक दिन में ब्लड 19,000 किमी. ट्रैवल करता है।
- रेड ब्लड सेल्स हीमोग्लोबिन के माध्यम से शरीर के विभिन्न हिस्सों को ऑक्सीजन पहुंचाते हैं।
- रेड ब्लड सेल्स या हीमोग्लोबिन की मात्रा में कमी आने से शरीर की कोशिकाओं को पर्याप्त ऑक्सीजन नहीं पहुंच पाती है, जिसके कारण एनीमिया (खून की कमी) रोग हो जाता है।

रेड ब्लड सेल्स

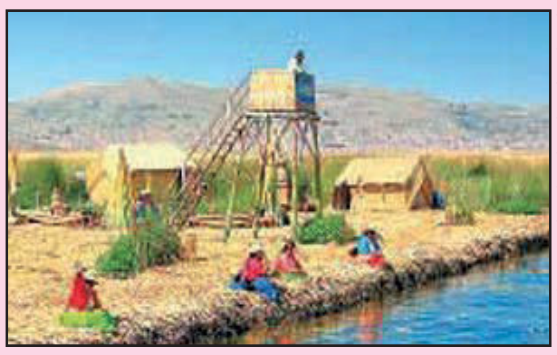
- रेड ब्लड सेल्स का जीवनकाल 120 दिन का होता है।
- करीब 80 लाख ब्लड सेल्स हर सेकंड मरते हैं और करीब इतने ही नए बनते हैं।
- एक रेड ब्लड सेल को पूरे शरीर का चक्कर लगाने में 20 से 60 सेकंड लगते हैं।

इसलिए है जरूरी

- ब्लड शरीर के तापमान को एक सा बनाए रखता है।
- खून शरीर के विभिन्न भागों से अपशिष्ट पदार्थों को इकट्ठा करके किडनी तक पहुंचाता है।
- पचे हुए भोजन को खून शरीर के विभिन्न भागों की कोशिकाओं में पहुंचाता है।
- ऑक्सीजन को फेफड़ों से शरीर के विभिन्न अंगों की कोशिकाओं में पहुंचनता है।



झील पर तैरता उद्यान



वेनेजुएली की माराकैबो झील इससे बड़ी है, पर वो वास्तविक झील नहीं है।) यहां बड़ी संख्या में वाटर बर्ड्स भी इस झील में रहते हैं। टीटीकाका झील में 41 द्वीप है, इनमें से कुछ पर घनी अबादी है। स्थानीय लोग झील में उगने वाले सरकंडों से बड़ी-बड़ी राफ्ट्स बनाते हैं। वे इन राफ्ट्स को मिट्टी से ढंक देते हैं और उन्हें फ्लोटिंग गार्डन यानी तैरते हुए बाग में बदल देते हैं। वे इन फ्लोटिंग गार्डस में बींस, मिर्च और दूसरी सब्जियां उगाते हैं। ये फ्लोटिंग गार्डस सैलानियों के आकर्षण का बड़ा केंद्र हैं।

दक्षिण अमेरिका में पेरू और बोलिविया के बीच एंडीज के ऊंचे पठार पर स्थित लेक टीटीकाका दुनिया की सबसे ऊंची झील है। इसकी समुद्र तल से ऊंचाई 3811 मीटर है। झील 190 किमी. लंबी है और इसकी अधिकतम गहराई 275 मीटर है। 9065 वर्ग किमी क्षेत्र में फैली यह झील दक्षिण अमेरिका की सबसे बडी झील भी है। (हालांकि

सबसे ऊंची राजधानी

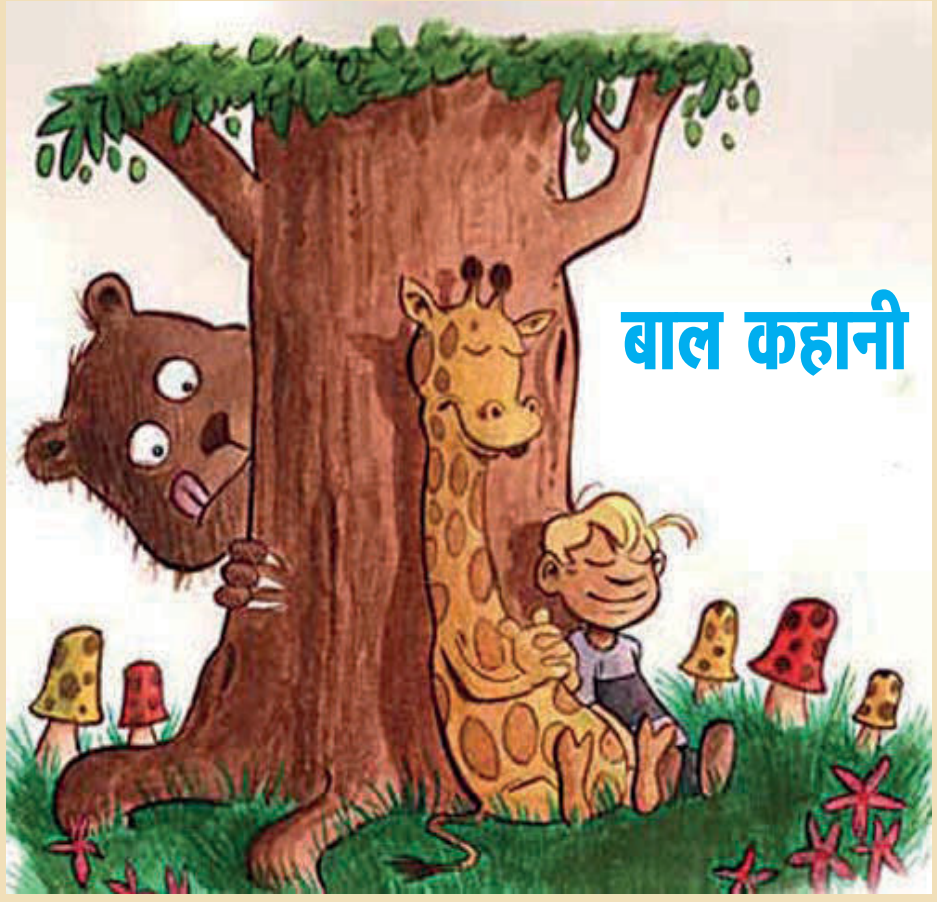


बोलिविया की राजधानी ला पाज को दुनिया की सबसे ऊंची राजधानी होने का मान प्राप्त है। इसकी समुद्र तल से ऊंचाई 3631 मीटर है।

हालांकि यह बोलिविया का सबसे ऊंचा शहर नहीं है। बोलिविया का सबसे ऊंचा शहर ओरूरो है। इसकी समुद्र तल से ऊंचाई 3715 मीटर है। ला पाज की खोज स्पेनिश लोगों ने सन् 1548 में की थी। इसकी अबादी करीब नौ हजार है।

एंडीज पर्वत माला में बोलिविया के कुछ गांव इतनी ऊंचाई पर हैं कि अगर आपको वहां जाना हो, तो आपको अपने साथ ऑक्सीजन सिलेंडर लेकर जाना होगा। यहां के एक गांव चाचलताया की समुद्र तल से ऊंचाई 5130 मीटर है।

चोरी की सजा



एक गांव में एक बूढ़ा किसान अपनी पत्नी के साथ रहता था। उसका एक छोटासा खेत था। उसमें सब्जियां बोकर और उन्हें बेचकर किसान गुजारा करता था। एक बार किसान ने सोचा कि इस बार वह पूरे खेत में शलगम बोएगा। उसने इस बारे मे अपनी पत्नी से बात की।

पत्नी ने कहा, 'शलगम की फसल अच्छी होगी, तब तो आराम से रह सकेंगे वरना भोजन के भी लाले पड़ जाएंगे।'

किसान ने पत्नी को मेहनत करने का आश्वासन दिया और फसल बो दी। किसान की किस्मत अच्छी थी कि इस बार शलगम की फसल बहुत अच्छी हुई। एक दिन एक बूढ़ा किसान खेत पर गया तो वह यह देखकर हैरान रह गया कि खेत में जगह-जगह शलगम के टुकड़े बिखरे पड़े हैं। किसान की समझ में नहीं आया कि यह कैसे हो सकता है। वह सोचने लगा कि यदि कोई आदमी शलगम चुराता तो पूरी ही उठा ले जाता। शलगम के टुकड़े करके तो किसी ने मेरा नुकसान करने की कोशिश की है। यह काम जरूर किसी दुश्मन का है। सोचते-सोचते वह घर पहुंच गया और अपनी पत्नी से बोला 'मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि हमारी दुश्मनी किससे है?'

पत्नी बोली—'हमारी दुश्मनी तो किसी से नहीं, जरा खुलकर बताओ। बात क्या है ?'' किसान ने सारी बात पत्नी को बताई।

पत्नी बोली—'लगता है तुम्हारा दिमाग बूढ़ा हो गया है, तभी दुश्मन की बात सोच रहे हो। भला हमारा दुश्मन कौन हो सकता है? जरूर कोई जानवर हमारी फसल खा रहा होगा।'

बूढ़े किसान को बात जंच गई और वह रात को पहरा देने खेत पर चला गया। वह हाथ में कुल्हाड़ी लिए खेत के किनारे घास में छिपकर बैठ गया। आधी रात में अचानक भालू आया और शलगम निकालकर कुछ खाने लगा और कुछ फैंकने लगा।

किसान ने आव देखा न ताव, कुल्हाड़ी जोर से भालू की तरफ मारी। कुल्हाड़ी भालू के पिछले पैर में लगी। भालू दर्द से चिल्लाता हुआ लंगडाता जंगल की तरफ चला गया।

उधर, टांग कटने से परेशान भालू किसान से बदला लेने की बात सेचने लगा। वह जंगल में गया और पेड़ से लकड़ी तोड़ कर इसकी चौथी टांग बना ली और ठक-ठक की आवाज के साथ चलने लगा। फिर एक दिन मौका देखकर वह सुबह को किसान के घर पहुंच गया। वह बाहर से गीत गुनगुनाने लगा।

भालू की आवाज सुनकर किसान और उसकी पत्नी थर-थर कांपने लगे। वे जल्दी से दरवाजा बंद करने दौड़े पर भालू भीतर आ चुका था। दोनों लोग डर के मारे अलमारी में घुस गए।

भालू इधर से उधर लंगड़ाता हुआ गाना गाता हुआ घूम रहा था। उसकी लकड़ी की टांग खट-खट की आवाज कर रही था। अचानक उसका लकड़ी की टांग निकल गई और वह अपना संतुलन खो बैठा। भालू घर की सीढ़ियों के पास के तहखाने में जा गिरा। किसान को जैसे ही भालू के तहखाने में गिरने की आवाज आई, उसने अलमारी से निकलकर तहखाने का दरवाजा बंद कर दिया। किसान की पत्नी घर से बाहर आकर शोर मचाने लगी। सारे पड़ोसी इकट्ठे हो गए। सबने मिलकर भालू को मार डाला। अब किसान चैन से रहने लगा।

किंगफिशर



प्रिय बच्चों, आपने अपने आस-पास कई तरह के पक्षी देखे होंगे। आइए आज हम आपको किंगफिशर के बारे में बताते हैं। वैसे तो भारत में नौ प्रकार के किंगफिशर पाए जाते हैं, लेकिन हम आपको आस-पास और अक्सर दिख जाने वाले किंगफिशर्स के बारे में ही बताएंगे। इनमें एक है स्माल ब्लू किंगफिशर और दूसरा वाइट ब्रैस्टेड किंगफिशर।

स्माल ब्लू किंगफिशर

इसका आकार लगभग घरेलू चिड़िया गौरेया जितना होता है। यह नीले-हरे रंग का होता है, मगर इसका सामने धड़ वाला हिस्सा हल्का भूरा होता है। सीधी मजबूत नुकीली चोंच के साथ किंगफिशर के लिए मछली पकड़ना आसान होता है। इसकी छोटी-सी पूंछ होती है। इनमें नर और मादा के फीचर्स लगभग समान होते हैं। अक्सर यह अकेला रहना पसंद करता है। इसे आप पानी के स्रोतों के पास देख सकते हैं, नदियों पोखर, तालाबों आदि के आस-पास के पेड़ों की डालों या तारों पर भी बैठा रहता है। पूरे भारत में स्मॉल ब्लू किंगफिशर मिल जाते हैं। इनका नीड़ बनाने का समय मार्च से जून तक का होता है। यह नदी के आस-पास के एकान्त गर्तों की नर्म जमीन खोदकर एक सुरंगनुमा घोंसला बनाते हैं, जो 50 सैंटीमीटर लंबा होता है तथा अंत में जाकर यह चौड़ा होता है। मादा किंगफिशर एक बार में पांच से सात अंडे देती है। नर और मादा बच्चे पालने के अपने कर्तव्य एकसाथ पूरे करते हैं।

वाइट ब्रैस्टेड किंगफिशर

यह आकार में मैना और कबूतर के बीच का-सा होता है। बेहद प्यारा-सा फिरोजी नीले रंग का इसका शरीर होता है और इसका सिर, गर्दन और धड़ का निचला हिस्सा चॉकलेटी भूरा होता है। जैसा कि इसका नाम है इसके सीने का कॉलर वाला हिस्सा सफेद होता है। इसकी चोंच लाल रंग की, मजबूत, लंबी और नुकीली होती है। जब यह उड़ता है तो अंदर के सफेद पर स्पष्ट दिखाई देते हैं। यह भी ज्यादातर अकेले रहना, शिकार करना पसंद करता है। इसे आप बाग-बगीचों, पेड़ों की बहुतायत वाले स्थानों में, पानी के आसपास या बिना पानी वाले स्थानों में भी देख सकते हो। यह भारत के सभी समतल मैदानों वाले इलाकों तथा कम ऊंचाई वाले पहाड़ी क्षेत्रों में पाया जाता है। यह किंगफिशर अक्सर दिख जाता है और यह बहुत अधिक पानी पर निर्भर नहीं रहता। नदी, तालाबों, गढड्ों के अतिरिक्त हल्के जंगलों में भी दिख जाता है, टैलीफोन की तारों पर इसे आप आसानी से बैठा हुआ देख सकते हैं। जब भी इसे रेंगता हुया या पानी में तैरता शिकार दिखता है यह उसके ऊपर मंडराने लगता है और सही अवसर पर झपटकर ले आता है। इसके भोजन में जलीय जन्तुओं मछली, टैडपोल के अलावा ग्रासहॉपर, छोटी छिपकलियां, गिरगिट और अन्य कीड़े शामिल हैं। इसकी आवाज दुहराती हुई चट्‌र्चट्‌चिर्र के एक अनवरत स्वर के रूप में होती है, जोकि यह उड़ते समय करता है। इसका नीड़ समय भी मार्च से जुलाई के मध्य होता है। इसका घोंसला भी आमतौर पर अन्य किंगफिशर्स जैसा, नदी या तालाब के नर्म किनारों पर जमीन के गर्त में सुरंगनुमा ही होता है। यह भी एक बार में 5-7 अंडे देता है। दोनों नर व मादा मिल कर अंडे से बच्चे निकलने तथा उसके बड़े होने और आत्मनिर्भर होने तक अपने सारे कर्तव्य मिलजुल कर निभाते हैं।